T.D.C. Part-I Honours, Paper-II

01 THURSDAY • APRIL • 2021

MARCH 2021

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

Q. इंग्लैण्ड में 1660 के पुनर्स्थापना के कारणों की विवेचना करें।

Ans इंग्लैण्ड के राजा चार्ल्स प्रथम को फाँसी पर लटका देना एक विचित्र घटना थी परन्तु इससे भी बढ़कर विचित्र घटना है। इंग्लैण्ड में इतने वर्षों के बाद पुनः राजतन्त्र का स्थापित हो जाना। वही राजतंत्र आज भी इंग्लैण्ड में वर्तमान है, जबकि आज का युग प्रजातन्त्र का युग है। इंग्लैण्ड में प्रजातंत्र का अन्त और फिर से राजतंत्र की स्थापना के निम्न प्रमुख कारण हैं :-

(1) क्रामवेल की मृत्यु के बाद इंग्लैण्ड के राजा का प्रश्न → क्रामवेल एक बेजोड़ शासक था। जनता उससे थर-थर काँपती थी। जब तक वह जिन्दा था, तब तक किसी व्यक्ति को उसका विरुद्ध जाने की हिम्मत नहीं हुई। पर उसके मरने के बाद ही जनता के सम्मुख एक भयंकर समस्या उठ खड़ी हुई कि उसके बाद इंग्लैण्ड का राजा कौन हो। क्रामवेल ने अपने ज्येष्ठ पुत्र रिचार्ड को अपना उत्तराधिकारी चुन लिया था लेकिन जनता उसको एकदम नहीं चाहती थी। जनता उसके विरुद्ध एक आवाज बुलन्द कर रही थी कि रिचार्ड अपने पिता की भाँति ही जनता को कुचलने वाला राजा होगा। जनता तो चार्ल्स द्वितीय से अधिक सहानुभूति रखती थी और उसी को इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठाना चाहती थी। लेकिन उस समय इंग्लैण्ड में जनता की आवाज की कोई कीमत नहीं थी। वहाँ तो सेना के अधिकारी का ही बोलबाला था। अतः सेना के अधिकारियों ने जनता की इच्छा के विरुद्ध

MAY 2021

M	T	W	T	F	S	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

इंग्लैण्ड का इतिहास, Paper-II (Hons)

2021 • APRIL • FRIDAY 02

रिचार्ड को इंग्लैण्ड की सेना का सेनापति बना दिया। रिचार्ड का छोटा भाई हेनरी स्काटलैण्ड के जेनरल मौंक और आयरलैण्ड के राजा ने मुक्त कंठ से उसकी प्रशंसा की।

(3) रिचार्ड की अयोग्यता :- इंग्लैण्ड में अब भी यह कहावत प्रचलित है कि "Common wealth का यह दुर्भाग्य था कि कामवेल ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को अपना उत्तराधिकारी चुना तथा रिचार्ड की कमजोरी और विलासिता के कारण कौमन-वेल्थ को नष्ट हो जाना पड़ा। यदि कामवेल अपने छोटे पुत्र हेनरी को अपना उत्तराधिकारी बनाता तो कौमन-वेल्थ को अपना बुरा दिन नहीं देखना पड़ता क्योंकि हेनरी में एक कुशल-शासक के सभी गुण वर्तमान थे। वह एक प्रशंसनीय राजनीतिज्ञ और माहिर सेनानी था, लेकिन रिचार्ड में इन सारे गुणों का भारी अभाव था। उसमें धर्म के प्रति कट्टरता भी नहीं थी। इसलिए वह अधिक दिनों तक इंग्लैण्ड का कर्णधार नहीं बना रह सका। रिचार्ड ने गद्दी पर बैठते ही अपनी पालियामेन्ट को चुनाव करवाया। दुर्भाग्य वश पालियामेन्ट में प्रजातन्त्र के विरोधियों को ही बहुमत प्राप्त हो गया। जिससे स्वभावतः पालियामेन्ट और सेना में कई झड़पें हो गई। रिचार्ड में इतना सामर्थ्य नहीं था कि वह झगड़े को शान्त करता और दोनों पर नियन्त्रण रखता। अतः उसने अपनी अकुशलता प्रदर्शित कर सेना का पक्ष लिया और पालियामेन्ट को स्थगित कर दिया। सेना ने लम्बी पालियामेन्ट के सदस्यों को भी पालियामेन्ट का सदस्य बना दिया। इस घटना से रिचार्ड

Scanned with CamScanner

History Honours Paper II

की इच्छा पूरी तरह से कुचल गई। उसने इसको अपना अपमान समझा और पदत्याग कर दिया। इसके बाद लोगों का ध्यान रिचर्ड द्वितीय की ओर गया लेकिन उसके लिए अभी परिस्थिति अनुकूल नहीं थी।

③ पुनः सैनिक शासन की स्थापना → रिचर्ड के हट जाने के बाद इंगलैण्ड में सैनिकों का फिर से बोलबाला हो गया। परन्तु Rump Parliament इसको बर्दाश्त नहीं कर सकी। रम्प ने इसका जमकर रूप से विरोध किया। उस समय सेना का सेनापति लैम्बर्ट था। उसने विरोध करते हुए देखकर शीघ्र ही रम्प को भंग कर दिया। भंग करने के बाद भी परिस्थिति से बाध्य होकर रम्प को फिर बुलाया गया। फिर भी सेना और रम्प में लड़ाई चलती रही जिससे सर्वत्र अशान्ति, अव्यवस्था और अराजकता फैल गई।

④ मौंक और लैम्बर्ट में होने वाली भिड़न्त → उस समय मौंक स्काटलैण्ड का शासक था और लैम्बर्ट इंगलैण्ड का सेनापति था। मौंक बहुत ही काम का व्यक्ति था। जब सभी लोग बातें करते थे तो वह

उस समय भी काम करता रहता था। जब रिचर्ड हट गया, ठीक उसी समय से वह रायलिस्टों की सेना का संगठन करने लग गया था। उसके सभी सैनिक रायलिस्ट थे। जब रम्प और सेना झगड़ा शुरू हुआ, तो वह मौका पाकर लैम्बर्ट से निपटने के लिए लंदन की ओर चल पड़ा।

इंगलैण्ड का इतिहास, Hons paper - II

5) कनवेन्शन पार्लियामेन्ट → मौंक ने 3 फरवरी को लंदन में प्रवेश किया। जिस समय वह लंदन में पहुँचा था उस समय रम्प पार्लियामेन्ट की बैठक हो रही थी। मौंक ने 1641 ई० के कानून के अनुसार रम्प से भंग हो जाने की अपील की। रम्प उसकी आज्ञा को मानकर शीघ्र ही भंग हो गयी। इस तरह से लम्बी पार्लियामेन्ट का बचा हुआ अंश समाप्त हो गया। इसके बाद एक नयी पार्लियामेन्ट का चुनाव 26 अप्रैल को पुरानी रीति और आजाद तरीके से हुआ, जो कनवेन्शन पार्लियामेन्ट कहलायी। इस नयी पार्लियामेन्ट की बैठक 1660 ई० के अप्रैल माह में हुई। इस पार्लियामेन्ट का नाम कनवेन्शन इसलिए पड़ा क्योंकि वह Royal Writ के द्वारा नहीं बुलायी गयी थी अर्थात किसी राजा ने उसे नहीं बुलाया था। इस कनवेंसन पार्लियामेन्ट के खास दूत के आकर राजा होने का निमन्त्रण पत्र दिया तो वह मारे खुशी से उछल पड़ा और निमंत्रण मंजूर कर ब्रेडा में ही एक घोषणा की कि वह पार्लियामेन्ट के अधीन रह कर शासन करेगा। इतना ही नहीं उसके साथ ही साथ यह भी घोषित किया कि वह अपने पिता के सभी दुश्मनों को बिना शर्त के ही क्षमा कर देगा, सैनिकों को वेतन देगा। लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता भी प्रदान करेगा और सैनिकों को हर तरह से खुश रखने का प्रयत्न करेगा। इस घोषणा के बाद वह 25 मई, 1660 ई० को बड़ी खुशी के साथ Dover के बन्दरगाह पर उतरा और अपने जन्म दिवस (29 मई, 1660 ई०) के अवसर पर उसने लंदन में प्रवेश किया। इस तरह उसने इंगलैण्ड में वैधानिक शासन की नींव डाल दी।

6) चार्ल्स द्वितीय का ताज ग्रहण करना → चार्ल्स द्वितीय

को लन्डन में आते हुए देखकर लोगों में खुशी का कोई पारावार न रहा और लोगों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। चार्ल्स द्वितीय ने लन्डन में प्रवेश करने के दृश्य को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रसिद्ध इतिहासकार A. B. Buckley ने वर्णन किया है - "The roads were strewn with flowers, the bells were ringing. The streets hung with flags and garlands and the fountains ran with wine, The army alone stood sullenly aloof." (अर्थात लंदन की सभी सड़कों और गलियों में फूल बिछे हुए थे, घंटियाँ बज रही थी। गलियों में झंडे और मालाएँ टंगी हुई थी, सड़कों के दोनों ओर कढ़े - कपड़ों की झालर पड़ी हुयी थी और फव्वारों से शराब की वर्षा हो रही थी। सड़कों के दोनों किनारे सैनिक चुप-चाप खड़े थे) इस तरह से सभी साज-बाज और उल्लास के साथ चार्ल्स द्वितीय का राज्याभिषेक हुआ। जिससे सारे देश के लोग आह्लादित हो उठे। गद्दी पर बैठने के कुछ महीने बाद ही चार्ल्स द्वितीय ने सेना को भंग कर दिया। जिससे सेना के सभी लोग लौटकर अपने घर चले गए और अपने घरेलू काम में लग गये। कुछ लोग अपनी दुकानों को सम्भाले और कुछ लोग फार्म (Farm) में काम करने लगे। चार्ल्स द्वितीय ने स्वयं अपना उद्गार इन शब्दों में प्रकट किया है :- "It seems it is my own fault" said the King slyly, that I have not come back sooner, or find nobody who does not tell me he has always longed for my return."

D. JHA. (SRAP) Coll.